वर्ष 3, अंक 3, मार्च 2019
जे 7, श्रीरामनगर रायपुर छ.ग.
आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

बसंत के मौसम का आप सबने बहुत मज़ा लिया होगा. इस दौरान पतंग उड़ाई होगी, खेल-कूद किया होगा और ढ़ेर सारे पकवान भी खाये होंगे. अब परीक्षा का समय फिर से आ गया है. आपको मन लगाकर पढ़ाई करना है जिससे आप खूब अच्छे नंबर लायें और अपना, अपने माता-पिता का और शिक्षकों का नाम भी रौशन करें.

हम किलोल में निरंतर रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री देने का प्रयास करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे. आप गर्मी की छुट्टियों में भी अपने मोबाइल पर किलोल का मज़ा नि:शुल्क ले सकते हैं. पत्रिका को डाउनलोड करने का लिंक आपने मोबाइल पर सेव करके रख लें.

किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है.

आलोक शुक्ला

<u>दो पेड़</u>

लेखक - विवेकानंद दिल्लीवार

एक नदी के किनारे दो पेड़ थे.....

उस रास्ते एक छोटी सी चिड़िया गुजरी और.....

पहले पेड़ से पूछा.. बारिश होने वाली है, क्या मैं और मेरे बच्चे तुम्हारी टहनी में घोसला बनाकर रह सकते हैं ?

लेकिन पेड़ ने मना कर दिया....

चिड़िया फिर दूसरे पेड़ के पास गई और वही सवाल पूछा. दूसरा पेड़ मान गया.

चिड़िया अपने बच्चों के साथ खुशी-खुशी दूसरे पेड़ में घोसला बना कर रहने लगी.

एक दिन इतनी अधिक बारिश हुई कि पहला पेड़ जड़ से उखड़ कर पानी मे बह गया.

जब चिड़िया ने उस पेड़ को बहते हुए देखा तो कहा...

जब तुमसे मैं और मेरे बच्चे शरण के लिये आए तब तुमने मना कर दिया था, अब देखो तुम्हारे उसी रूखे बर्ताव की तुम्हे सजा मिल रही है.

पेड़ ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया - मैं जानता था कि मेरी जड़ें कमजोर है और इस बारिश में टिक नहीं पाऊंगा. मैं तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की जान खतरे में नहीं डालना चाहता था. मना करने के लिए मुझे क्षमा कर दो. ये कहते-कहते पेड़ बह गया..

किसी के इंकार को हमेशा उनकी कठोरता न समझें

क्या पता उसके उसी इंकार से आप का भला हो.

कौन किस परिस्थिति में है शायद हम नहीं समझ पाएं.

इसलिए किसी के चरित्र को उनके वर्तमान व्यवहार से ना तौलें...

<u>तीन मित्र</u>

लेखक - दीपक कंवर

घने जंगल के बीच मे तालाब के आसपास मोर, कछुआ और खरगोश तीन मित्र रहा करते थे. सभी आनंदमय दिन गुजार रहे थे, परन्तु वे हमेशा शिकारी के आये दिन धड़पकड़ से परेशान थे. शिकारी जब भी आता किसी न किसी जंगली जीव को फंसाकर ले जाता था. एक दिन तालाब के किनारे बैठे तीनो पेड के नीचे आराम करते हुए चर्चा कर रहे थे कि उस शिकारी से कैसे छुटकारा पाया जाये. तभी कछुए को एक उपाय सूझा और उसने दोनो मित्रो को बताया. सभी उसकी बातों से सहमत हो गए.

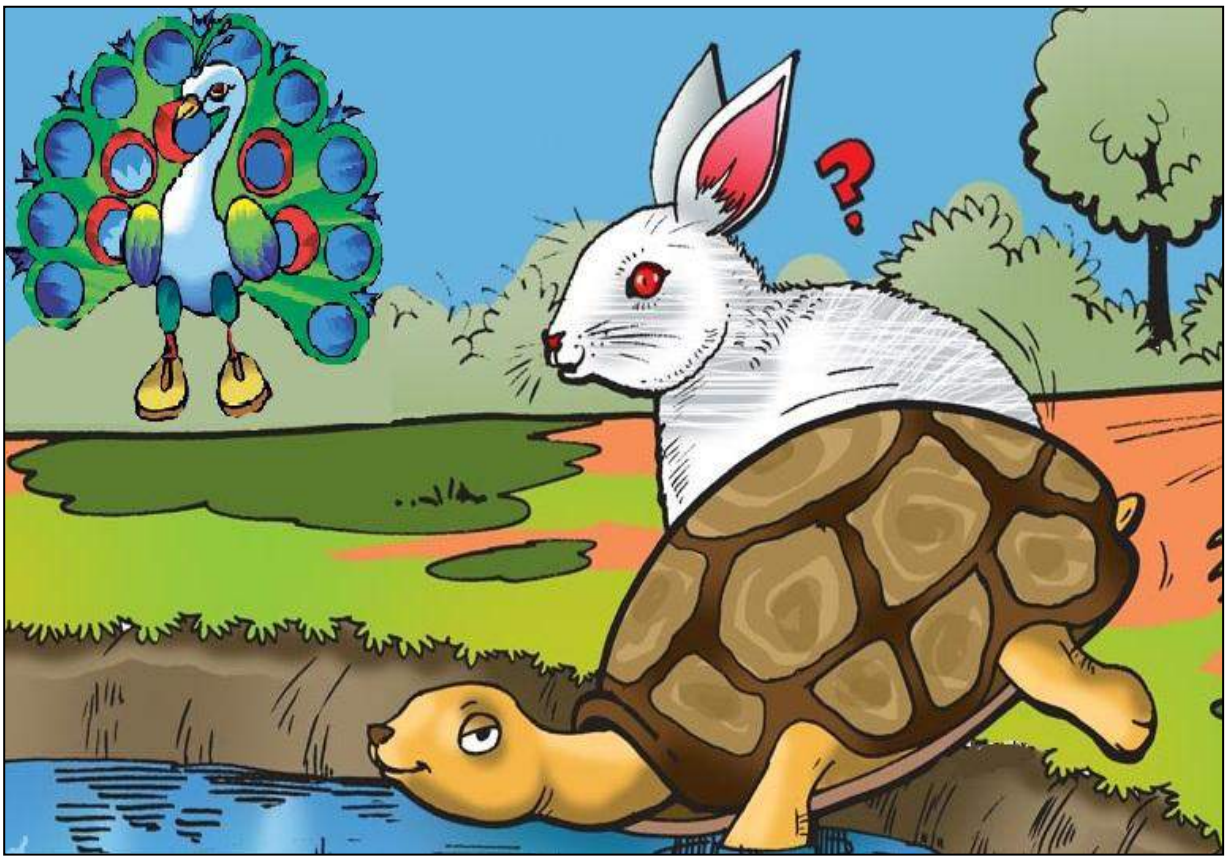

गर्मी के दिनों मे तालाब का पानी बहुत कम हो गया था. एक दिन घूमते-घूमते शिकारी जंगल मे आया. गर्मी से परेशान भूखा प्यासा थककर पेड़ की छाया मे जाल क किनारे रखकर आराम करने लगा. अचानक मोर शिकारी के पीछे से चुपके-चुपके आकर जाल को चोंच मे दबाकर सामने की तरफ भागने लगा. इसे देखकर शिकारी पीछे-पीछे दौड़ने लगा. मोर तालाब के किनारे जाकर जाल को छोड़कर भाग गया. शिकारी जाल पाकर लंबी सांस लेते हुए वहीं बैठ गया. तभी उसे तालाब के किनारे पानी मे खरगोश फंसा हुआ दिखाई दिया. इसे देखकर उसने सोचा कि आज खरगोश को ही पकड़ा जाये. वह तालाब की ओर गया. ऐसा लग रहा था कि खरगोश शिकारी की पकड़ मे आ ही जायेगा. घुटने भर पानी में जाकर उसने पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन खरगोश पहुंच के बाहर था. उसने सोचा थोड़ा और आगे जाउं. उसके कुछ दूर जाने पर खरगोश और दूर चला गया. तालाब मे खरगोश कछुए की पीठ पर बैठा था. जैसे-जैसे शिकारी उसे पकड़ने आगे बढ़ता, कछुआ इशारा पाकर आगे बढ़ जाता और खरगोश उसकी पकड़ से दूर हो जाता. अब शिकारी गुस्से मे आकर खरगोश को पकड़ने के लिए पानी में छपाक से कूद गया. खरगोष तो पकड़ मे नहीं आया बल्कि शिकारी डूबने लगा. वह ज़ोर से चिल्लाने लगा बचाओ-बचाओ, पर उसे बचाने कोई नहीं आया और कुछ देर मे वह डूब गया था. दलदल के बीच शिकारी को लाकर योजना के अनुसार तीनों ने शिकारी को फांस लिया और जंगल की समस्या को दूर किया.

Golden eggs

Author - Dilkesh Kumar Madhukar

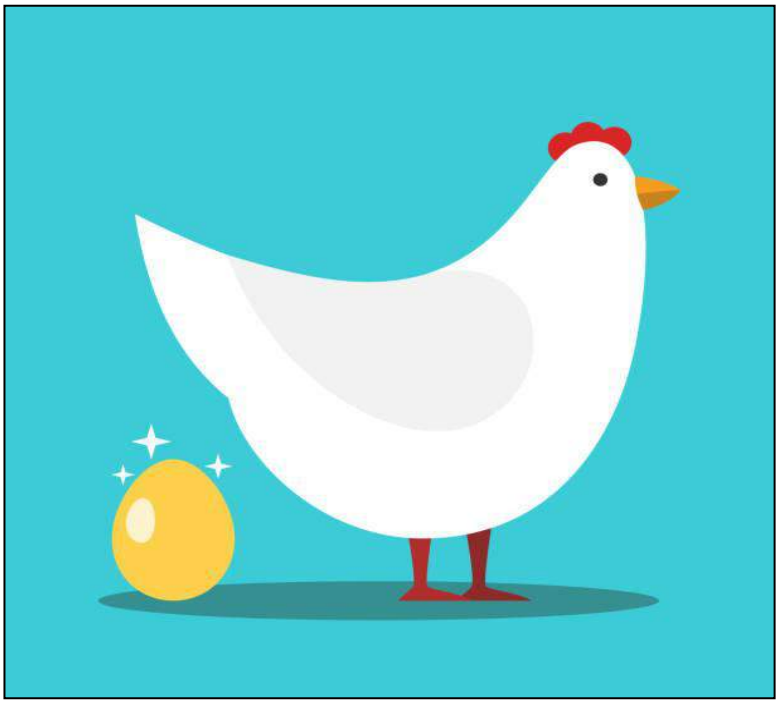

Many years ago a man and his wife had the good fortune to have a bird, which laid a golden egg everyday. Lucky though they were, they soon began to think, they were not getting rich fast enough.

They imagined that if the bird is able to lay golden eggs, its insides must be made of gold and they thought that if they could get all the precious metal at once, they would get mighty rich very soon. So the man and his wife decided to kill the bird.

However upon cutting the bird open, they were shocked to find that its innards were like that of any other bird.

MORAL - Think before you Act. Don't be greedy.

Difficult words meaning-

Fortune - अच्छा भाग्य Laid - अंडा देना

Imagine - कल्पना करना Inside - अंदर

Precious – कीमती Metal - धातु

Mighty - ताकतवर However – परन्तु

Shocked – चौंकना Innards - भीतरी अंग

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

मालपुए

लेखक - गुलजार बांधे

एक बार की बात है एक गांव में एक बूढ़ा आदमी रहता था. एक दिन वह जंगल में लकडी काटने गया. लकड़ी काटने के बाद वह घर चलने लगा. चलते-चलते वह बहुत थक गया. तभी उसे एक आदमी मिला. बूढ़े ने उस आदमी से कहा - बेटा तुम इस लकड़ी के गट्ठर को घर पहुंचा दो तो तुम्हे एक चीज़ दूंगा.

उस आदमी ने लकड़ी का गट्ठर बूढ़े के घर पहुंचा दिया. बूढ़े बाबा ने उस आदमी को मालपुए दिए. फिर बूढ़े ने उस आदमी को बताया कि झाड़ी के पीछे एक गुफा है जिसमें तीन बौने रहते हैं. उसने कहा कि उन बौनो को मालपुए बहुत पसंद है. बूढ़े ने कहा कि मालपुए उन बौनों को दे देना. वे तुम्हे एक चक्की देंगे जिससे तुम अमीर बन जाओगे.

इस कहानी को पूरा करके बहुत से पाठकों ने भेजा है. कुछ को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की गई कहानी

बूढ़ा आदमी चक्की लेकर अपने गांव गया और दूसरे दिन जो घर मे थोड़ा सा अनाज था उसे चक्की में पीसने लगा. वह देखता है कि थोड़े से अनाज को पीसने पर बहुत सारा आटा चक्की से निकलने लगा. इस प्रकार से उस बूढ़े को अब खाने की कमी नही रही और वह गांव के दूसरे गरीब व भूखे लोगो को भी खाना देने लगा. जब गांव के लोगो को जादुई चक्की के बारे में पता चला तो गांव वाले भी उस बूढ़े के पास आकर अपना अनाज पिसाई कराने लगे और उसके बदले में बूढ़े को कुछ दाम दे देते. इस तरह से गांव वालों की गरीबी व भुखमरी धीरे-धीरे दूर हो गयी. जादुई चक्की की बात दूर दूर तक फैल गयी. लोग अपना अनाज लाते और बूढ़े की चक्की से पिसाई कराकर बहुत सारा आटा लेकर जाते. बदले में उस बूढ़े को कुछ पैसे व अन्य जरूरी सामान देकर जाते. देखते ही देखते एक वर्ष के भीतर उस बूढ़े की गरीबी पूरी तरह से दूर हो गयी. वह अब भी खुशी-खुशी लोगो का अनाज पीसता और बदले में उसे कुछ न कुछ मिलता. इस प्रकार उस जादुई चक्की के कारण आसपास के बहुत सारे गावो के लोगो की भुखमरी व गरीबी दोनो दूर हो गयी और बूढ़े आदमी के साथ साथ सभी लोग सुख पूर्वक जीवन यापन करने लगे।

सीख:- सच्चे मन व लगन से किये जा रहे हर कार्य मे देर से ही सही सफलता जरूर मिलती है.

रवि कुमार टेकाम व्दारा पूरी की गई कहानी

उसके बाद वह आदमी उस गुफा के अंदर जाता है. वह आदमी उन बौनों को मालपुए दे देता है. मालपुए के बदले में बौनों ने उस आदमी को एक चक्की दी. एक बौना बोला यह चक्की ऐसी वैसी चक्की नहीं है, यह चक्की जादुई चक्की है. इस चक्की से जो भी चीज मांगोगे मिल जाएगी. उसके बाद उस चक्की को लाल कपड़े से ढ़ंक देना.

वह आदमी उस चक्की को लेकर खुशी खुशी घर लौट जाता है. घर पहुंच कर वह आदमी चक्की को जमीन पर रख कर बोला चक्की चक्की चावल निकाल. चावल निकालने के बाद वह आदमी उस चक्की को लाल कपड़े से ढ़ंक देता है. फिर कहता है चक्की चक्की दाल निकाल. उसके बाद उस चक्की को लाल कपड़े से ढ़ंक देता है. उसके बाद उस दाल चावल को पकाकर अपने बीवी बच्चों को खिलाता है. धीरे धीरे वह अमीर हो जाता है.

उसका एक सौतेला भाई भी था. वह बहुत धूर्त था. एक दिन उसके सौतेले भाई को पता चल गया कि उसके पास एक जादुई चक्की है. उसने चक्की को चुराने की योजना बनाई और एक रात चक्की को चुरा ले गया. वह अपनी बीवी बच्चों के साथ समुद्र की ओर चल पड़ा. समुद्र किनारे चलते चलते उसे एक नाव मिली. उस नाव पर बैठकर समुद्र के बहुत दूर जाने के बाद उसे चक्की को चलाने का लालच आया. वह उस चक्की से बोला चक्की चक्की नमक निकाल. उसके बाद चक्की ने नमक निकालना शुरू किया. उसको चक्की को रोकने का तरीका पता नहीं था. चक्की नमक निकलता ही रहा और वह तीनों नाव और चक्की के साथ डूब गए.

शिक्षा - लालच बुरी बला है।

विश्वविजय मरकाम व्दारा पूरी गई कहानी

और वह आदमी ने चक्की को लेकर अपने घर आ गया. फिर उसने उस चक्की से कहा चक्की चक्की चावल निकाल और उसके बाद उस चक्की में से बहुत सारा चावल निकला. फिर से आदमी ने कहा- चक्की चक्की मिर्ची निकाल, तब ढेर सारी मिर्ची निकलने लगी. उसके बाद उसने उस चक्की को लाल कपड़े से ढ़ंक दिया जिससे चक्की बंद हो गई. फिर वह सारा सामान भरकर मंडी ले गया. उसे बेचने पर ढ़ेर सारे रुपए मिले, जिससे वहां अमीर बन गया. यह देख कर उसका भाई सोचने लगा कि वह पहले तो बहुत गरीब था, अब वह दिनोंदिन अमीर कैसे हो रहा है? तभी उसे पता चला कि यह सब चक्की के कारण हो रहा है.

एक रात को उसने उस चक्की को चुरा लिया. उस चक्की को लेकर अपनी पत्नी और अपने बेटे के साथ समुद्र की ओर भाग गया और वह समुद्र को पार करने लगा. उसकी पत्नी ने कहा यह क्या है? पति ने कहा यह जादू की चक्की है. इसमें जो मांगो मिल जाएगा. उसके पति ने उसमें से सोना निकालने को कहा. चक्की चक्की सोना निकाल. और उस चक्की से सोना निकालना शुरू हो गया. उसे चक्की बंद करना नहीं आता था. नाव पर ढ़ेर सारा सोना हो जाने वजन बढ़ने लगा और सभी समुद्र में डूब गए.

शिक्षा - अधूरा ज्ञान नुकसानदायक है.

अगले अंक के लिये पुष्पा शुक्ला जी ने हमें एक अधूरी कहानी भेजी है -

अधूरी कहानी - आकाश का फ्रिज

लेखिका - पुष्पा शुक्ला

कल रात बादलों से बर्फ गिरने लगी. बड़ी - बड़ी, गोल - गोल, तड़- तड़ , तड़ - तड़. टॉमी बाहर सोया था, बेचारे के सर पर एक जमकर पड़ी. कूँ- कूँ करता अंदर आया. मुझे तो बड़ा मजा आ रहा था. मैंने तो चुपके से दो - चार खाई भी. ठंडी- ठंडी, सफेद -सफेद रसगुल्ले जैसी. मुझे देख टॉमी भी खाने लगा. वह जैसे ही खाने को करता वे घुल जातीं. पर मुझे एक बात समझ नहीं आई की बादलों में बर्फ़ जमी कैसे? क्या उनके पास बहुत बड़ी - सी फ्रिज है?

इस मज़ेदार कहानी को पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं. कुछ को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

<u>रामू और सॉप</u>

लेखिका - सेवती चक्रधारी

गोपालपुर नामक गाँव मे रामू नाम का किसान रहता था. वह बहुत मेहनती था और स्वभाव से बहुत अच्छा था. वह हमेशा दूसरो की मदद करता था. इस कारण गांव के सभी लोग उसे बहुत पसंद करते थे.

एक दिन रामू अपने खेत मे काम कर रहा था. काम करते हुए अचानक उसने देखा कि खेत के कोने मे एक सांप चोटिल हो गया है. वह दर्द से तड़प रहा था. रामू को उस पर दया आ गई पर वह सांप के पास जाने से डर रहा था कि कही सांप उसे काट न ले. पर सांप की हालत उसे देखी नही जा रही थी. सांप भी दर्द के कारण अचेत सा हो गया था. रामू ने हिम्मत दिखाई और सांप को उठाया. उसके घाव को धोया व पास की औषधि वाली झाड़ी से पत्ते तोड़कर, पीसकर उसके घाव मे लगाया और घाव में कपड़ा बांध दिया. वह वहीं बैठकर सांप को देखने लगा. सांप को थोड़ी राहत मिली और वह वहां से चला गया. रामू भी घर वापस आ गया.

कुछ दिन बीतने के बाद एक सुबह जब रामू उठा तो उसने देखा कि, वही सांप फन फैलाये उसने आंगन मे बैठा था. उसने रामू से कहा कि वह कोई साधारण सांप नही बल्कि नागलोक का राजा नागराज है. ‘‘तुमने मेरी जान बचाई है. इस उपकार के बदले मैं तुम्हे सोने के सिक्को से भरा यह कलश दे रहा हूं.’’ रामू ने हाथ जोड़कर कहा - ‘‘प्रभु आपकी उदारता के लिए थन्यवाद! पर मुझे क्षमा करें. मै ये धन नही ले सकता, क्योकि ये मेरी मेहनत का नही है. मुफ्त मे मिले धन का कोई महत्व नही रहता है. सांप ने कहा- ‘‘तुम धन्य हो रामू. पर फिर भी कभी

ज़रूरत पड़े तो मुझे याद करना. मै तुरंत आ जाऊँगा.'' ऐसा कहकर सांप अदृश्य हो गया.

मित्रता

लेखिका - पद्यमनी साहू

छोटी छोटी पहाड़ी व हरे भरे पेड़ो से घिरा था एक गांव सोनपुर. सोनपुर में एक परोपकारी व बुध्दिमान किसान रहता था गोपाल. सुहानी सुबह थी भगवान सूर्य नारायण अपनी समस्त रश्मियों के साथ नील गगन में उदीयमान थे. गोपाल अपने खेतो की ओर जा रहा था. तभी उसका सामना एक विषधर से हुआ. गोपाल उस विषधर के बारे में जानता था कि वह बहुत गुस्से वाला था. वहाँ से गुजरने वालो को डस लेता था.

गोपाल ने उसे समझाया कि निर्दोष लोगों पर वार नही करना चाहिए. विषधर ने उसकी बात मान ली व दोनो दोस्त बन गये. अब विषधर किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाजा था. अब उससे कोई नहीं डरता था. लोग उसे पत्थरो से मारने लगे. विषधर मरणासन्न स्थिति में पहुँच गया.

एक दिन गोपाल को अपने मित्र की बहुत याद आई. उसने सोचा मित्र से मिल आता हूं. मित्र को इस हाल में देख गोपाल को बहुत दुःख हुआ. गोपाल ने उसे समझाया डसना मत किन्तु अपनी रक्षा के लिए फुफकार ज़रूर मारना. विषधर ने ऐसा ही किया. लोग विषधर से डरने लगे. किन्तु वह किसी को काटता नही था. विषधर मित्र की बात से समझ गया था कि कभी कभी दिखाने के लिए गुस्सा करना पड़ता हैं, ताकि लोग हमारी सहजता का नाजायज फायदा न ले सकें.

सांप और किसान

लेखिका - कु. भूनेश्वरी

एक गांव में एक बड़ा दयालु किसान रहता था. वह अपने 10 साल के बेटे और अपनी पत्नी के साथ रहता था. एक दिन वह किसान अपने खेत जा रहा था. रास्ते में उसे एक प्यारा सा घायल सांप मिला. किसान को उस पर दया आ गई. उसने उसकी घाव पर दवाई लगाई. सांप व किसान दोस्त बन गए.

किसान उसके लिए रोज दूध ले जाता और सांप उसे पीकर अपना पेट भरता और धन्यवाद कहता. एक दिन किसान ने अपने बेटे को दूध ले जाने को कहा. उसका बेटा बहुत ही शरारती था. उसने सांप को मारने की कोशिश की. तब सांप ने उसे काट लिया. लड़का रोने लगा. उसकी आवाज सुनकर गांव वाले इकट्ठा हो गए. किसान ने सांप से विनती की कि वह उसके बेटे को बचा ले. पर सांप न माना. फिर किसान रोने लगा. अपने दोस्त को रोता देख सांप मान गया. उसने अपना ज़हर वापस खींच लिया. उसके बेटे ने सांप से माफी मांगी और उसे धन्यवाद भी दिया.

शिक्षा - हमें सभी जीव जंतुओं की सेवा और रक्षा करना चाहिए.

दयालु लकड़हारा

लेखिक - कु. अरुणा

एक गांव में एक लकड़हारा रहता था. उसका नाम सामू था. सामू बहुत ही दयालु और ईमानदार था. वह लकड़ी बेचकर अपना जीवन यापन करता था. हर रोज की तरह एक दिन वह जंगल लकड़ी काटने जा रहा था कि उसे एक सूखी लकड़ी का पेड़ मिला, जिसके नीचे एक सांप घायल पड़ा हुआ था. सामू को उस पर दया आ

गई और उसे अपने घर ले जाकर उसका इलाज किया. दो दिनों में ही सांप ठीक हो गया. सांप ने सामू को धन्यवाद किया और घर के पास एक पेड़ पर रहने लगा.

सामू और सांप रोज सुबह उसी पेड़ के पास मिलने लगे. इस तरह दोनों में दोस्ती हो गई. सामू रोज सुबह उस पेड़ के नीचे सांप से मिलने कटोरी में दूध लेकर जाता था.

शिक्षा - सभी प्राणियों से प्रेम करना चाहिए.

चिड़िया

लेखिका - कु. प्रमिला

एक चिड़िया थी जो अपने लिए एक घोंसला बनाने के लिए एक पेड़ की तलाश कर रही थी. आखिरकार उसे एक पेड़ मिल ही गया. वह पेड़ उस जंगल का सबसे बड़ा पेड़ था. उसमें पहले से ही एक घोसला बना था. चिड़िया को बहुत दुःख हुआ कि उस पेड़ में एक भी चिड़िया नहीं थी. लेकिन उसे यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वहीं पास में एक झोपड़ी में राम नाम का लड़का था.

चिड़िया और राम के बीच दोस्ती हो गई. चिड़िया राम के घर रोज दाने के लिए जाती थी. एक बार चिड़िया अंडे दे रही थी तभी एक सांप आया और उसने चिड़िया को अंडे देते हुए देख लिया. जब चिड़िया भोजन करने के बाद लौट रही थी तो

उसने देखा कि सांप उसके अंडे खा कर जा रहा था. चिड़िया ने राम को बताया कि सांप उसके अंडे खाता है.

अगली सुबह राम चिड़िया के पास जा रहा था तब झाड़ी के पास उसे सांप दिखाई दिया. उसने सांप समझाते हुए कहा कि तुम चिड़िया के अंडे नहीं खाओगे तो मैं तुम्हें रोज दो बार दूध दूंगा. सांप राम की बात को मान गया. अब रोज सुबह शाम राम सांप को दूध देता था. तीनों में दोस्ती हो गई और तीनों खुशी-खुशी रहने लगे.

शिक्षा- आपस में मिलजुल कर रहना चाहिए.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

संस्मरण - कांच का टुकडा

लेखक - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

मैं शासकीय प्राथमिक शाला लफंदी के भारत माता बाग में बैठा था. तभी कक्षा पहली की एक छात्रा कुमारी लोकेश्वरी साहू मेरे पास आयी और बोली - "गुरजी ये क्या है?" मैं उसके हाथ में कांच का टुकडा देखकर डर गया कि कहीं उसे चोट न लग जाये. मैंने कहा - "ये तो कांच का टुकडा है." वह बोली - "इसका क्या करूं?" मैने कहा - "इसे कहीं दुर फेंक दो." उसने मेरे चेहरे को गौर से देखा और बोली - "गुरूजी इसको फेंकेंगे तो किसी के पैर में चुभ जायेगा."

मैं कुछ देर अवाक रह गया !! कुछ सोचकर मैं बोला - "लाओ मुझे दो. मैं उचित स्थान पर रख दूंगा." उसने मुझे फिर कहा - "गुरुजी इसे कहीं फेंकना मत देना

नहीं तो किसी के पैर में चुभ सकता है'' मैने कहा ठीक है, और उस कांच के टुकडे को लेकर कक्षा में गया और सबको यह बात बताई. उसकी तारीफ कर सब बच्चों से ताली बजवाई. यह संदेश पूरी कक्षा में बताया कि कोई भी कांच का टुकड़ा यहां-वहां नहीं फेंकना चाहिए. हम सब की आदत होती है किसी भी अनुपयोगी वस्तु को कहीं भी फेक देंते हैं. पर इस प्रकार कहीं भी फेंक देन से अन्य लोगों को नुकसान को सकता है. कांच का टुकड़ा किसी के पैर में लगने पर घाव, दर्द, पीड़ा और आघात पहुँचा सकता है. यह बात बच्चों को संदेश के रूप में समझाई.

उस छोटी सी छात्रा की सोच कितनी सकारात्मक है. मुझे भी इसने बहुत कुछ सिखा दिया. कभी -कभी हमारे जीवन में हमसे छोटे भी हमें बड़ी बात सिखा देते हैं.

लेख - प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान शिक्षण का कण्टकाकीर्ण पथ

लेखक - प्रमोद दीक्षित 'मलय'

विज्ञान का अध्ययन बच्चों को तर्कशील एवं विवेकवान बनाता है. वे अवलोकन, प्रेक्षण, परिकल्पना, प्रयोग, निरीक्षण एवं निष्कर्ष के सोपानों से गुजरकर किसी तथ्य का अन्वेषण करते हुए एक सैध्दान्तिक फलक की रचना करते हैं जिसमें सच की इबारत लिखी होती है. फलतः बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टि एवं सोच विकसित होती है और वह किसी घटना के निहितार्थ को विज्ञान की कसौटी पर कस कर ही आगे बढ़ते हैं न कि आंख मूंद स्वीकार कर अंधविश्वास के गहन अंधेरे पथ पर फिसलते हैं. अवैज्ञानिक सोच का ही परिणाम है कि कभी गणेश मूर्तियां दूध पीने लगती है तो कभी क्रॉस से रक्त की धारा फूट बहने लगती है. आस्था, कर्मकाण्ड या अंधविश्वास का रास्ता विज्ञान के प्रासाद के व्दार पर आकर ठहर जाता है. विज्ञान

के उपवन में अंदर वही प्रवेश कर सकता है जिसकी चेतना विज्ञानमय हो और दृष्टि एवं सोच दर्पण की मानिंद निर्मल. पर दुर्भाग्य से देश में ऐसा है नहीं. उपग्रह प्रक्षेपण के पूर्व विघ्नहरण के लिए वैज्ञानिकों व्दारा किये जाने वाले हवन-पूजन के दृश्य उनके स्वयं के प्रयोग के विश्वास प्रति सवाल खड़ा करते हैं. यदि विज्ञान के शिक्षक बिल्ली के रास्ता काट जाने पर अपनी यात्रा स्थगित कर दें, सिर पर कौवा बैठ जाने को मृत्यु की सूचना समझ लें, रास्ते पर पानी से भरी बाल्टी और बछड़े को दूध पिलाती गाय मिलना शुभ और सफलता की गारंटी मान लिया जाये तो सोचना पडेगा कि वह विद्यार्थियों को कैसा विज्ञान बोध करा रहे होंगे. उल्लेखनीय है कि बच्चों में इसका बीजवपन समाज एवं घर-परिवार व्दारा पहले ही कर दिया गया होता है और हमारी प्राथमिक शिक्षा के केन्द्र उसके निर्मूलन के बजाय खाद-पानी दे पोषण का काम करते हैं. कालेज तक आते आते उसके अन्तर्मन में अंधविश्वास और ठकोसलों की जड़ें इतनी गहरी और पुष्ट हो जाती हैं कि उन्हें उखाड़ फेंकना असम्भव सा हो जाता है. रही सही कसर शिक्षकों का अतार्किक अवैज्ञानिक आचरण पूरी कर देता है.

आज़ादी के सत्तर सालों के बाद भी हम देश में एक वैज्ञानिक वातावरण क्यों नहीं बना पाये? क्यों हम अपनी प्राथमिक शिक्षा को विज्ञान का दृढ़ आधार नहीं दे सके? क्यों किसी भी प्राथमिक स्कूल में विज्ञान का कोई छोटा-सा भी उपकरण बच्चों के हाथ में नहीं पहुंच पा रहा? कब तक विज्ञान को किताबों से लिखाया और रटाया जाता रहेगा? प्रयोग के लिए जगह और अवसर कब-कहां मिलेगा? क्यों विज्ञान के शोधों में हम वैश्विक स्तर पर कहीं दिखाई नहीं देते? कब तक हम विश्वगुरु होने का थोथा गान गाते फिरते रहेंगे? उत्तर कौन देगा? सर्वत्र मौन पसरा है. जाति, धर्म एवं भाषा के नाम पर तो आये दिन आंदोलन होते हैं पर प्राथमिक विद्यालयों में वैज्ञानिक उपकरणों एवं प्रयोगशालाओं की व्यवस्था के लिए क्यों

कोई आंदोलन नहीं होता. प्राथमिक विद्यालयों से उभर रहे दृश्य निराश करते हैं क्योंकि उनमें विज्ञानमय जीवन की धड़कन सुनाई नहीं देती बल्कि अंधविश्वास की जड़ता का कर्कश स्वर गूंजता है.

हमारे स्कूलों में सभी विषयों को एक ढ़र्रे या सांचे पर ही पढ़ाया जा रहा है. मेरा मानना है कि हर विषय का अपना एक स्वभाव और प्रकृति होती है और उसे उसी के अनुरूप पढ़ाया जाना चाहिए. एक शिक्षक भाषा और विज्ञान को या गणित और सामाजिक विषय को एक तौर-तरीके से नहीं पढ़ा सकता. दुर्भाग्य से हमारे स्कूलों में यही हो रहा है. दूसरी बात, बच्चों में विज्ञान शिक्षा के प्रति एक अज्ञात भय, कि विज्ञान बहुत कठिन विषय होता है, भर दिया गया है, जो नितांत गलत और अव्यावहारिक है. इससे बच्चों में विज्ञान शिक्षा के प्रति अरुचि और अलगाव पैदा होता है. कोई विषय कठिन या सरल नहीं होता. यह शिक्षक की दृष्टि ही है जो उसे कठिन और सरल के रूप में बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत करती है. वहीं शिक्षकों का रुदन रहता है कि विज्ञान शिक्षण के लिए आवश्यक संसाधन नहीं हैं. प्रयोगशालाएं नहीं हैं. मुझे लगता है कि यदि सरकारें प्रत्येक वर्ष थोड़ी ही सही पर निश्चित धनराशि मुहैया करा मूलभूत सुविधाएं जुटाये और शिक्षक पाठों के आधार पर अधिकांश शिक्षण अधिगम सामग्री बच्चों के परिवेश से एवं बच्चों के सहयोग से जुटाते हुए 'कबाड़ से जुगाड़' सूत्र को थाम कर आगे बढ़ें तो बच्चों में विज्ञान के प्रति न केवल रुचि जाग्रत होगी बल्कि उनमें यह विज्ञान बोध भी उत्पन्न होगा कि विज्ञान उनके आसपास बिखरा हुआ है. उनके जीवन से, घर-परिवार-परिवेश से जुड़ा हुआ है. इससे बच्चों में आत्मविश्वास तो पैदा ही होगा साथ ही उनमें चीज़ों का अवलोकन-निरीक्षण करने, तुलना एवं कल्पना करने, तर्क करने, निष्कर्ष निकालने की क्षमता का विकास होगा और विज्ञान उन्हें सरल, सुबोध एवं रुचिकर लगने लगेगा. हालांकि कुछ स्वप्रेरित शिक्षकों ने निजी पहल से अपने स्कूलों में छोटी

प्रयोगशालाएं बनाई हैं, पर वह समाधान नहीं है. विज्ञान शिक्षा एवं शिक्षण के तरीकों, विज्ञान विषय के प्रति शिक्षकों की मानसिकता, शिक्षण की चुनौतियों और विज्ञान शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाने के क्रियाकलापों पर एन0सी0एफ0-2005 का स्पष्ट मत है कि विज्ञान को बच्चों के परिवेशीय ज्ञान और समझ से जोड़कर पढ़ाया जाये. पर ऐसा होता कहीं दिखाई नहीं देता. शिक्षक व्दारा ब्लैकबोर्ड पर लिखे गये प्रश्नोत्तर बच्चे कॉपियों में अच्छी तरह से याद करने के शिक्षकीय निर्देश के साथ चुपचाप उतार रहे हैं. बस, किताब में जो छपा है उसे हूबहू ब्लैकबोर्ड पर अंकित कर रटवा देना ही विज्ञान शिक्षण हो गया है. पूरी प्रक्रिया अवैज्ञानिक, नीरस, उबाऊ और बच्चों की सोचने-समझने की शक्ति को कुंद करने वाली है.

आखिर, शिक्षक कब समझेंगे कि चुप रहना अनुशासन नही, डर एवं भय है जो सीखने में बाधक है. शिक्षक रटवाने के बजाय बच्चों को उनके परिवेशीय ज्ञान से जोड़ते हुए चर्चा कर समझ विकसित करते हुए अधिकाधिक प्रश्न पूछने और अभिव्यक्ति के सहज अवसर कब उपलब्ध करायेंगे? शिक्षक के रूप में बच्चों में अभिव्यक्ति की खुशी की खिलखिलाहट और समझ के आत्मविश्वास को पनपते हुए महसूस करना होगा. उन्हें खोजने और नया रचने-गढ़ने के लिए प्रेरित करना होगा और इसके लिए जरूरी शर्त है कि हमें उन पर विश्वास करना सीखना होगा. उपकरणों से खेलने की निर्भय आज़ादी देनी होगी. इन्हीं रास्तों से बाल वैज्ञानिक प्रतिभाएं निकल कर विज्ञान के फलक को रोशन करेंगी. पर दुर्भाग्य से विद्यालयों में ऐसा नहीं हो रहा है. आने वाली हर सुबह डराती है क्योंकि शिक्षक के हाथ में फिर वही छड़ी होगी, ब्लैकबोर्ड में प्रश्नोत्तर होंगे, और होगा रटने का दबाव. प्रश्न पूछने पर प्रोत्साहन नहीं बल्कि हताशा और झिड़की होगी. कक्षा में अभिव्यक्ति की खुशी की खिलखिलाहट और समझ के आत्मविश्वास की जगह होगी चुप्पी और उस चुप्पी में दम तोड़ती बाल वैज्ञानिक प्रतिभाएं.

छत्तीसगढ़ी लेख - बसंत पंचमी के तिहार

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

बसंत रितु ल सब रितु के राजा कहे जाथे. काबर के बसंत रितु के मौसम बहुत सुहाना होथे. ए समय न जादा जाड़ राहे न जादा गरमी. ए रितु में बाग बगीचा सब डाहर आनी बानी के फूल फूले रहिथे अउ महर महर ममहावत रहिथे. खेत में सरसों के फूल ह सोना कस चमकत रहिथे. गेहूं के बाली ह लहरावत रहिथे. आमा के पेड़ में मउर ह निकल जथे. चारों डाहर तितली मन उड़ावत रहिथे. कोयल ह कुहू कुहू बोलत रहिथे. नर नारी के मन ह डोलत रहिथे. ए सब ला देखके मन ह उमंग से भर जथे. एकरे पाय एला सबले बढ़िया रितु माने गेहे.

बसंत पंचमी ल माघ महिना के पंचमी के दिन याने पांचवां दिन तिहार के रुप में मनाय जाथे. ये दिन ज्ञान के देवइया मां सरस्वती के पूजा करे जाथे. एला रिसी पंचमी भी कहे जाथे. ए दिन पीला वस्तु अऊ पीला कपड़ा के बहुत महत्व हे. आज के दिन सब मनखे मन पीला रंग के कपड़ा पहिर के पूजा पाठ करथे.

बसंत पंचमी के दिन ल शुभ काम के शुरुवात करे बर बहुत अच्छा दिन माने गेहे. जइसे, नवा घर के पूजा पाठ, छोटे लइका के पढ़ाई लिखाई के शुरुवात, नींव खोदे के काम, दुकान के पूजा पाठ, मोटर गाड़ी के लेना आदि.

बसंत पंचमी के कथा - जब ब्रम्हा जी ह संसार के रचना करीस त सबसे पहिली मानुस जोनी के रचना करीस. फेर वोहा अपन रचना से संतुष्ट नइ रिहीस. काबर के आदमी मन में कोई उतसाह नइ रिहीस. कलेचुप रहे राहे. तब विष्णु भगवान के अनुमति से ब्रम्हा जी ह अपन कमंडल से जल (पानी) निकाल के चारो डाहर छिड़कीस. एकर से पेड़ पौधा अऊ बहुत अकन जीव जंतु के उतपत्ति होइस.

एकर बाद एक चार भुजा वाली सुंदर स्त्री भी परगट होइस. ओकर एक हाथ में वीणा दूसर हाथ में पुस्तक तीसरा हाथ में माला अऊ चौथा हाथ ह वरदान के मुद्रा में रिहीस. ब्रम्हा जी ह ओला वीणा ल बजाय के अनुरोध करीस. जब ओहा वीणा ल बजाइस त चारो डाहर जीव जंतु पेड़ पौधा अऊ आदमी मन नाचे कूदे ल धरलीस. सब जीव जंतु में उमंग छागे. जीव जंतु अऊ आदमी मन ल वाणी मिलगे. सब बोले बताय बर सीखगे. तब ब्रम्हा जी ओकर नाम वाणी के देवी अऊ स्वर के देने वाली सरस्वती रखीस. मां सरस्वती ह विदया अऊ बुद्धि के देने वाली हरे. संगीत के उतपत्ति मां सरस्वती ह करीस. ए सब काम ह बसंत पंचमी के दिन होइस. एकरे पाय बसंत पंचमी ल मां सरस्वती के जनम दिवस के रुप में मनाय जाथे.

पतंग उड़ाय के परंपरा - बसंत पंचमी के तिहार ह खुशी अऊ उमंग के तिहार हरे. ये दिन पतंग उड़ाय के भी परंपरा हे. आज के दिन छोटे बड़े सब आदमी पतंग उड़ाथे अऊ खुशी मनाथे. कतको जगा पतंग उड़ाय के प्रतियोगिता भी होथे.

ए प्रकार से बसंत पंचमी के तिहार ल सब झन राजीखुशी से मनाथे अऊ एक साथ मिलके रहे के संदेश देथे.

जीवनी - भारत की प्रथम महिला राज्यपाल सरोजिनी नायडू

लेखक - प्रमोद दीक्षित 'मलय'

भारत भूमि कर्म की पुण्य धरा है. यह साहित्य, शिक्षा, संस्कृति, संगीत, कला, ज्ञान-विज्ञान की जननी है और पोषक भी. जीवन के विविध क्षेत्रों में जहां पुरुषों ने विश्व गगन में अपनी सामर्थ्य की गौरव पताका फहराई है तो महिलाओं ने भी सफलता के शिखर पर अपने पदचिह्न अंकित किए हैं. सरोजिनी नायडू भारतीय राजनीति और काव्य कानन की एक ऐसी ही महाविभूति हैं जिनके कृतित्व और व्यक्तित्व की सुवास से विश्व महमहा रहा है. जिनकी आभा से जग चमत्कृत है. लोक ने 'दि नाईटिंगेल ऑफ इंडिया' कह उनकी प्रशस्ति की. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष होने का गौरव हासिल किया तो भारत के किसी राज्य की सर्वप्रथम राज्यपाल बनने का कीर्तिमान भी रचा. कविताओं में प्रेम और मृत्यु के गीत गाये तो प्रकृति के कोमल उदात्त मनोहारी चित्रों में लेखनी से इंद्रधनुषी रंग भरे. किसान-

कामगारों के श्रम के प्रति निष्ठा व्यक्त की तो देशराग को क्रान्ति स्वर भी दिया. उनका जीवन प्रेरक है और अनुकरणीय भी.

भारत कोकिला सरोजनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में एक शिक्षित बंगाली परिवार में हुआ था. पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय एक वैज्ञानिक और शिक्षा शास्त्री थे जिन्होंने हैदराबाद में निजाम कॉलेज की स्थापना की थी. माता श्रीमती वरद सुंदरी गृहणी थीं और बांग्ला भाषा में कविताएं लिखती थीं. परिवार के शैक्षिक एवं साहित्यिक परिवेश का प्रभाव सरोजिनी के बालमन पर पड़ना ही था. तभी तो सरोजिनी बाल्यकाल से ही प्रकृति के सौन्दर्य को देखती और कल्पना-सागर में डूब जातीं. 13 वर्ष की छोटी अवस्था में 'लेडी ऑफ दि लेक' नामक एक लंबी कविता लिखी जिसे पढ़कर निजाम हैदराबाद बहुत प्रभावित हुए और सरोजिनी को उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए इंग्लैंड जाने का परामर्श और छात्रवृत्ति के रूप में आर्थिक सहयोग प्रदान किया. लंदन के किंग्स कॉलेज और बाद में कैम्ब्रिज के गिर्टन कालेज में अध्ययन किया. कविता सृजन का संस्कार वहां भी बना रहा फलतः पढ़ाई के साथ-साथ वह न केवल कविताएं रचती रहीं बल्कि अंग्रेजी के बड़े कवियों के संपर्क में भी बनी रहीं. इस काव्य सत्संग का प्रभाव यह पड़ा कि सरोजिनी की कविताओं में अब भारतीय दृष्टिकोण प्रतिबिम्बित होने लगा. 1905 में प्रकाशित आपके पहले कविता संग्रह 'गोल्डेन फ्रेशहोल्ड' ने कविता प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर खींचा. 'बर्ड ऑफ टाइम' (1912) और 'ब्रोकन विंग' (1917) कविता संकलनों के प्रकाशन से साहित्य क्षेत्र में सरोजनी की काव्यात्मक सौन्दर्य, बिम्ब विधान, आलंकारिक शब्द चातुर्य, प्रकृति का सूक्ष्म अवलोकन और राष्ट्रीय चेतना को पुष्टि और स्वीकृति मिली. इसी बीच 1898 में चिकित्सक डॉ.गोविंद राजुल नायडू से अन्तरजातीय विवाह किया. तत्कालीन सामाजिक संदर्भों और

रूढ़ियों के बीच सरोजिनी का यह साहसिक कदम एक बड़े बदलाव के रूप में देखा गया।

देश का वह दौर स्वतंत्रता आंदोलन और अंग्रेजों के विरुध्द सतत् संघर्ष का दौर था. और शायद ही कोई युवा रहा हो जो उन परिस्थितियों में देश के लिए कुछ कर गुजरने के भाव से न भरा रहा हो. सरोजिनी का मन भी 1905 के बंग भंग की घटना से आहत हुआ और हृदय में देश सेवा की उत्कट इच्छा जगी. संयोग से 1914 में इंग्लैंड में महात्मा गांधी जी से भेंट हुई. वह गांधी जी के जीवन आदर्शों एवं विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुई और उनके सुझाव पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में काम करना प्रारंभ कर दिया. वह देश की आम जनता से सीधा संवाद करना चाहती थीं ताकि लोगों की कठिनाईयों, पीड़ा और इच्छाओं को समझ सकें साथ ही स्वाधीनता आंदोलन में शामिल होने हेतु सभी को प्रेरित कर सकें. इस उद्देश्य से उन्होंने 1915 से 1918 तक संपूर्ण दे-रु39या का भ्रमण किया. इस दौरान किसानों, मजदूरों, महिलाओं और विद्यार्थियों से बात की. वह अंग्रेजी, हिंदी, बांग्ला, उर्दू और तेलुगू भाषाओं की अच्छी जानकार थीं. देश भ्रमण की अवधि में वह लोगों से बातचीत करने में अपनी इस भाषाई सामर्थ्य का उपयोग करके सहजता से आत्मीय सम्बंध स्थापित कर लेती थीं. उनकी लोकप्रियता न केवल कांग्रेस पार्टी के अन्दर बल्कि पूरे देश में लगातार बढ़ती ही जा रही थी. जनता उनको सुनना-देखना चाहती थी. इसी का परिणाम था कि सरोजिनी नायडू को 1925 में कानपुर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में चुना गया. कांग्रेस के इतिहास में वह पहली महिला अध्यक्ष थीं. 1932 में वह भारत की प्रतिनिधि के रूप में अफ्रीका गईं और वहां की जनता और सरकार के साथ वार्ता की. 1930 में नमक सत्याग्रह में गांधी जी के साथ रहीं और गांधी जी की

गिरफ्तारी के बाद नमक सत्याग्रह का नेतृत्व करतीं रहीं. 1931 में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में उनको भारतीय प्रतिनिधि मंडल में स्थान मिल गया.

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय सहभागिता की और गांधी जी के साथ 21 महीने तक कारावास भोगा. संयोग से सरोजिनी की पुत्री पद्मजा नायडू भी उसी समय जेल में बंद थीं जो आजादी के बाद पश्चिमी बंगाल की राज्यपाल बनीं. मार्च 1947 में एशियाई संबंध सम्मेलन के संचालन समिति की अध्यक्षता की. स्वतंत्रता के लिए उनके अदम्य संघर्ष और आमजन के प्रति आत्मीयता भाव से वह आमजन के हृदय में बस गई थीं. सरोजनी नायडू की प्रशासनिक क्षमता और लोक चेतना के कारण ही आजादी मिलने के बाद उनको उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य का राज्यपाल बनाया गया. वह भारत के किसी प्रदेश की राज्यपाल बनने वाली पहली महिला हैं.

राजनीति की सक्रियता के बीच भी उनका काव्य-उर्वर मन कविताएं रचता रहा. उनके राष्ट्रीय चिंतन, भारत के प्रति अतिशय प्रेमभाव, महिलाओं को स्वावलम्बी और राजनीतिक रूप से सचेतन बनाने की पीड़ा, और प्रकृति के प्रति तादात्म्य सम्बंध उनकी कविताओं में मुखर होते देखा जा सकता है. उनकी कविताओं का भारतीय भाषाओं के साथ ही फ्रेंच और जर्मन में भी अनुवाद हुआ है. उनकी महत्वपूर्ण कृतियों में 'दी मैजिक ट्री', 'ए ट्रेजरी आफ पोयम्स', 'द गिफ्ट ऑफ इंडिया' प्रमुख रूप से उल्लिखित की जा सकती हैं. उनकी मृत्यु के बाद उनकी कविताओं का एक संग्रह 'द वेदर ऑफ द डॉन' 1961 में प्रकाशित किया गया. इंडियन वीवर्स, इंडिया लव सांग्स, इंडियन फॉरेस्ट जैसी काव्य रचनाएं कविता के नवल मानक स्थापित करती हैं. इतना ही नहीं, उनकी कविताओं में देशभक्ति, प्रकृति के विभिन्न मनोहारी रूप महिला, प्यार और मृत्यु जैसे विषय बार-बार उभर

कर आते हैं. वह मानवता का राग गाते हुए वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को बल प्रदान करते हुए कहती हैं - 'लिए बांसुरी हाथों में, हम घूमें गाते-गाते. मनुष्य सभी हैं बंधु हमारे, सारा जग अपना है.' तो वहीं अपने लक्ष्यों को प्राप्त किए बिना वह मृत्यु को भी स्वीकार नहीं करेंगी. वह कहती हैं, 'मेरे जीवन की सुधा नहीं मिटेगी जब तक. मत आना हे मृत्यु कभी तुम मुझ तक.' वह देशवासियों से मेहनत करने का आह्वान करती हैं, 'श्रम करते हैं हम कि हम समुद्र हो तुम्हारी जागृति का क्षण. हो चुका जागरण, अब देखो, निकला दिन कितना उज्ज्वल.'

राजनीति एवं काव्य की इस अप्रतिम प्रतिभा ने 2 मार्च 1949 को नश्वर देह को त्याग अनन्त यात्रा पर प्रस्थान किया. भारत सरकार ने 13 फरवरी 1964 को उनकी इस स्मृति को नमन करते हुए 15 नए पैसे का एक डाक टिकट जारी किया था. आज सरोजिनी नायडू भले ही हमारे बीच नहीं हैं पर उनके कर्म और विचार देशवासियों को कर्मपथ पर ब-सजय़ने को सदा प्रेरित करते रहेंगे. एक दीपस्तम्भ की भांति अपने आलोक से राष्ट्र-साधकों का मार्गदर्शन करतीं रहेंगी.

नवाचार - अभिव्यक्ति कौशल विकास - बाल-सभा एवं साप्ताहिक प्रतिक्रिया

प्रस्तुतकर्ता - चुमेश्वर काशी

अंग्रेज़ी माध्यम शाला छिंदगढ़ सुकमा में शिक्षक श्री डी.एस. चुरेन्द्र, श्री चुमेश्वर काशी, श्री तुलाराम बघेल और श्री सुरेश प्रजापति व्दारा बाल सभा में पिछले सप्ताह की शैक्षणिक गतिविधियों एवं अध्यापन कार्य के संबंध में बच्चों से प्रतिक्रिया ली जाती है एवं विस्तार से चर्चा की जाती है. इसके आधार पर शिक्षण कार्य में सुधार लाया जाता है और अगले सप्ताह का वर्क प्लान तैयार किया जाता है. इससे बच्चों में अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है और भय दूर होता है. बच्चों एवं शिक्षकों के बीच संप्रेषण बेहतर होता है और शैक्षणिक कार्य में सुधार होता है.

<u>नवाचार - पाठ का सारगर्भित रूप में प्रदर्शन</u>

प्रस्तुतकर्ता - आशा उज्जैनी

पाठ को पूरा पढ़ने के पश्चात उसके पात्रों और सहायक सामग्री को छात्रों व्दारा चित्रकला से प्रदर्शित कराया जाता है एवं पूरे पाठ को सारांश में समझाने के लिये कहा जाता है. इस तरह से छात्रों को पूरा पाठ याद कराना आसान होता है. और उनमें अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है. इसके उदाहरण स्वरूप 2 चित्र देखिये -

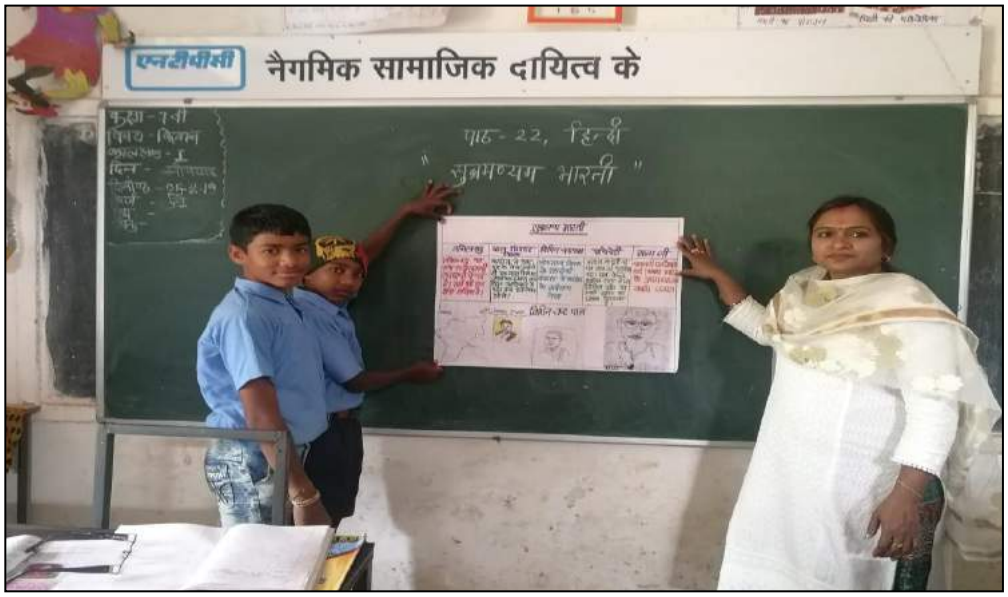

चिड़िया

लेखक - बलदाऊ राम साहू

फुदक-फुदक आने वाली, नन्ही चिड़िया।

चीं-चीं गीत सुनाने वाली, नन्ही चिड़िया।

फुर्र-फुर्र उड़ जाती है ना जाने किस ओर,

गाँव शहर दिख जाने वाली, नन्ही चिड़िया।

चोंच में भर कर दाना लाती खलिहानों से,

मेहनत करके खाने वाली, नन्हीं चिड़िया।

तितली रानी

लेखक - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

एक थी तितली रानी, सुंदर और सुहानी।

पंख पखारे आती है, बाग में वह मुस्काती है।।

सुंदर -सुंदर पंखों से, बडी वह इतराती है ।

डाल-डाल पर जाकर, अपनी चाल दिखाती है।।

फूल-फूल पर बैठ कर, पराग चूस वह खाती है।

परियों से भी वह सुंदर, अपनी शान दिखाती है।।

मन ही मन तितली रानी, सुंदर वह मुस्काती है।

बच्चों की मन को वह, बडे प्यार से भाती है।।

<u>नाना नानी गाते गाना</u>

लेखक देवानंद साहू

नाना नानी गाते गाना

सा रे ग म प ध नि सा

मामा मेरे तुम भी गाओ

सा नि ध प म ग रे सा

सा सा रे रे ग ग म म

सात सुरो से सजते सरगम

प प ध ध नि नि सा सा

मन को ये भाते है हरदम

तुम भी मेरे सुर में गाओ

अपने सुर से इसे मिलाओ

पौष्टिक नित भोजन को खाओ

पढ़ने रोज स्कूल को आओ

बनायें नयी रंगोली

लेखक - चन्द्रहास सेन

आ गया ऋतुराज बसंत, खुशियां चारों ओर हैं।।

मचल रहे हैं बाग बगीचे, यौवनाई का जोर है।।

पीली चूनर ओढ़ धरा आम्र कुंजो से कह रही।।

मलयगिरि की चंदन खुशबू, मेरे तन से निकल रही।।

नील परी अलसी के पौधे, नीले अम्बर से पूछ रहे।।

कब बजेगी शहनाई अपनी, रिश्ते नए जुड़ रहे।।

सरसों की मादकता देख, टेसू में मुस्कान है।।

ऋतुराज के आगमन की, यही तो पहचान है।।

नहीं अछूता मानव जन, बना रहे हैं टोली।।

मधुर मुस्कान से कह रहे हैं, आ रही है होली।।

गली गली में गुलाल उड़ेगा, रंग जायेगी चोली।।

मन भावन मीतों से करेंगे, अजब गजब ठिठोली।।

सभी जनों से मैं कहूंगा, बोलें हरपल मीठी बोली।।

व्देष घृणा मे प्रेम मिलाकर, बनायें नई रंगोली।।

बसंत

लेखक - गोपाल कौशल

शिशिर ऋतु की हुई बिदाई
बसंत आया धरा पर बधाई ।।
मंद-मंद हवा चली गांव-गली
डाल-डाल पर कलिया खिली ।।

कोयल वन-आंगन कूक रही
तितली रानी हुलस रही ।।
भौंरों का सुमधुर गीत सुन
कुमदिनी भी बिहँस रही ।।

हर्षित जन - मन ,वन - संत
आया धरा पर प्यारा बसंत ।।
हरियाली संग खुशहाली देने
आया ऐश्वर्य - वैभव अनंत ।।

बसंत बहार

लेखिका - पुष्पा नायक

ऋतुओं में राजा की संज्ञा है जिसे

प्रेम प्यार की मोहिनी शक्ति है जो

आम की मंजरियों का मुकुट

सरसों का पीला फूल

चारों ओर हो मौसम का खुमार

लो आ गई बंसंत की बहार

कोयल की मोर की आवाज़

ठिठुरन के अंत की नई शुरुआत

धरती भरे रंग बिरंगे फूलों से

फूलों की खुशबू से सारा माहौल

हो खुशगवार

लो आ गई बसंत की बहार

अलसी के नीले फूल

गेहूं की पकती हुई बालियां

महुए की महक

प्रकृति को हो जैसे सोलह श्रंगार

लो आ गई बसंत की बहार

बसंत जितना वन का है उपवन का है

उससे कहीं ज़्यादा मन का है

मनुष्य मन की कोमल

प्रेम भावनाओं का उभार

लो आ गई बसंत की बहार

बारह मास

लेखक - चन्द्रहास सेन

चैत बैशाख की धूप में,जला धरती का कण कण।

सूखा कुंआ खाली पोखर, प्यासा तरसा जन जन । ।

जेठ तपा कुछ ऐसा, सन सन चली पवन।।

आषाढ़ सुहावन मन भावन, धरती बनी दुल्हन ।।

सावन बरसा भादो बरसा, ताल तलैया जागे।।

नाव चली नदी की धारा, कृषक झूमे नाचे।।

गया बिखर बादलों का झुँड, कुँवार मन कुम्हलाया।।

आया कार्तिक पाक महीना, घर घर दीप जलाया।।

ठँडक आया खेत लहराया, अगहन पूस कटी फसल।।

मेहनत नाचे किस्मत जागे, जीवन हुआ आज सफल।।

माघ महीना मेल बढावे, सुन्दर मेला मड़ाई।।

फागुन आयो रंग बरसायो,सबसे कर लो मिताई।।

मौसम

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

कैसा दिन है आया,
बिन मौसम बरसात है लाया।
ठंडी ठंडी हवा के साथ ,
पानी की बौछारें लाया।

स्वेटर साल ओढ के सब ,
घर में बैठे हैं दुबके ।
गरम गरम चाट पकौड़े
खा रहे चुपके चुपके ।

गरमा गरम चाय ,
सबके मन को भाया ।
स्वेटर पहने या रैनकोट
अभी तक समझ न आया।

मिट्टी की सौंधी खुशबू
मन मे है खुशियाँ लाया ।
ठंडी के इस मौसम में
कैसा दिन है आया ।

मासूम बेटियाँ

लेखिका - श्वेता तिवारी

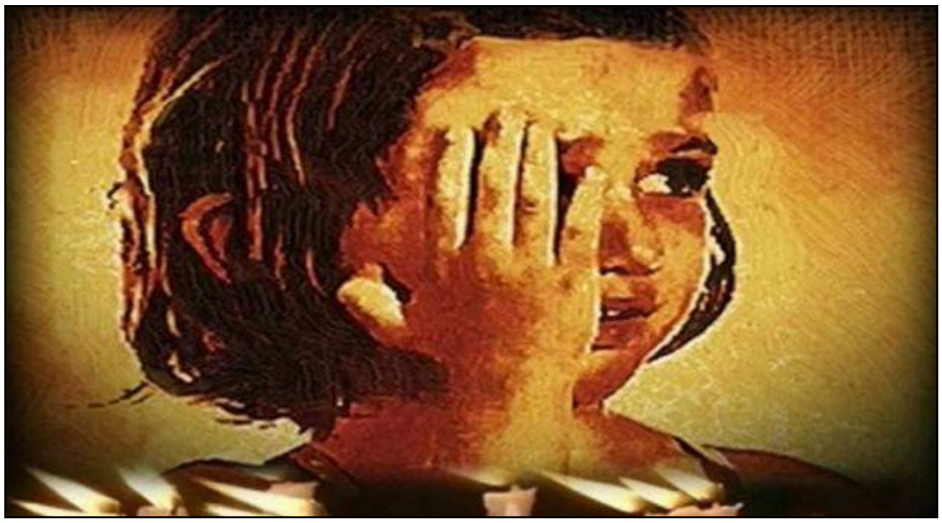

बिन बेटी के सोचो
ये दुनिया कैसी होगी

न भाई की बहना होगी
न कोई घर में बहु
न माँ का दुलार कहीं
न दादी की कहानी

बेटी तो पिता का अभिमान
रखे हर दम सब का ध्यान
बेटी तो दो कुल की लाज
सब पर लुटाए अपना प्यार

अपनी आदत में बदलाव लाएं
हम सब बेटी को अपनाएं
बेटे तो बाँटे दौलत सारी
बेटी तो दुःख हरती है

बेटी है घर की खुशहाली
दूर करे घर की बदहाली
इन्हें खुले आकाश में उड़ने दो
अपनी इच्छा पूरी करने दो

सोचो अगर बेटी न जन्मी
कैसी होगी ये दुनिया

सरहद पर जवान

लेखक - गोपाल कौशल

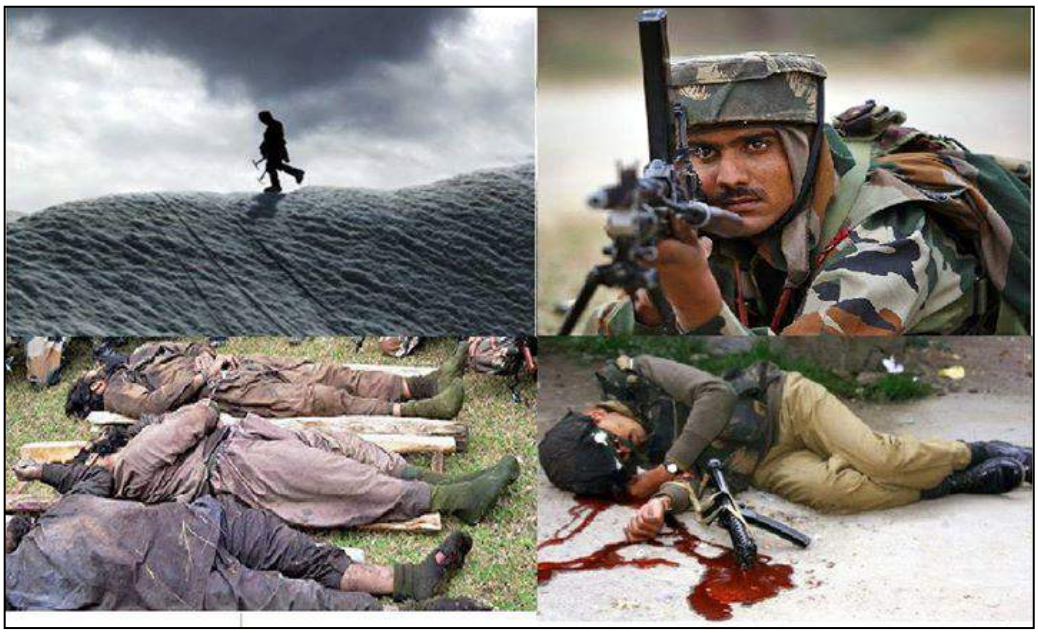

सरहद पर खड़े जवान
हमारी आन-बान-शान ।
इनकी जांबाजी पर
गर्व करता हिन्दुस्तान ।।

खड़े रहते सीनातान
सरहद पर शेरे जवान ।
देश का ये रक्षा कवच
गर्व करता हिंदुस्तान ।।

भरते नित नई उडान
गाकर प्यारा राष्ट्रगान ।
जय हिंद,वंदे मातरम्
गर्व करता हिंदुस्तान ।।

शत्रु की ले लेते जान
सरहद पर खड़े जवान ।
सुकून से सोता अवाम
गर्व करता हिंदुस्तान ।।

शून्य डिग्री पर जवान
मुस्तैदी से रखें ध्यान ।
हर माँ बेखौफ़ रहती
सरहद पर है जवान ।।

फर्ज निभाता जवान
दर्द छुपाता जवान ।
कर्ज दूध का उतारता
देकर वह अपनी जान ।।

हम सबका स्वाभिमान
सरहद पर खड़े जवान ।
देशप्रेम के ये फौलादी
गर्व करता हिंदुस्तान ।।

सरस्वती वंदना

लेखिका - स्नेहलता "स्नेह"

कुंदामाल मैं अर्पित करती

श्रध्दा पुहूप समर्पित करती

हे त्रिगुणा त्रिलोकव्यापिनी

सुर की देवी संगीतदायिनी

मै लोहा धातु तुम पारस

स्वर्ण बनाओ चढ़ाऊं गंधरस

शब्द शक्ति उत्कृष्ट बना दो

अमृत ज्ञान का मुझे पिला दो

अनुशीलन वेदों का करूं

ध्यान गुरूचरण कमल धरूं

कलम को मेरी बुध्दि देना

हृदय भाव में शुध्दि देना

स्नेहमयी आचरण होवे

भाई-भाई में रण न होवे

ब्रम्हचारिणी हे आराध्या

जन-जन को दान दो विद्या

कलम सैन्य गढ़े नव साहित्य

प्रखर तेज हो बने आदित्य

"स्नेह" दासी अरदास करें

धरती गगन उल्लास भरे

मेरा प्यारा स्कूल

लेखिका - पद्यमनी साहू

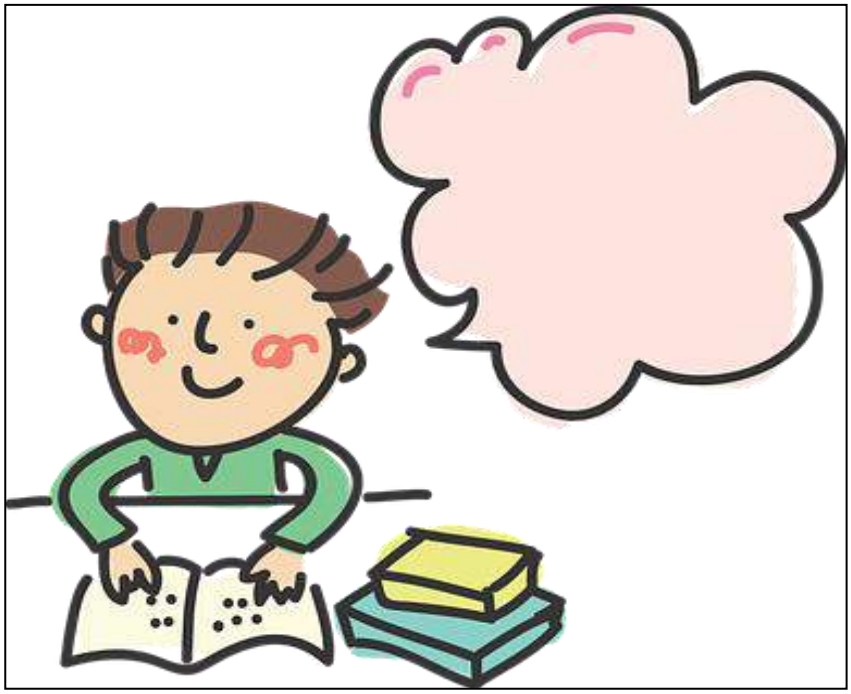

मेरा प्यारा स्कूल मन को बहुत है भाता

रंग बिरंगे फूलों की क्यारी से मुझको बहुत लुभाता।

बेला जूही और गुलाब लगते है सारे खास

सुंदर तितलियों की कतार लग जाते फूलों के पास ।

शिक्षक कक्षा में जब आते खेल खेल में हमें पढ़ाते

हिंदी गणित और भूगोल झटपट हम समझ जाते ।

नई नई चीजें हैं लाते हमे ज्ञान की बात बताते

गीत कविता हमे सिखाते सच्चाई की राह दिखाते।

चित्रों से है सजी दीवारें सुंदर सुंदर प्यारे प्यारे

सोनू मोनू चिंकी नीतू विस्मय हो कर देखें सारे ।

मेरा प्यार स्कूल मन को बहुत है भाता

रंग बिरंगे फूलों की क्यारी से मुझको बहुत लुभाता।

शिक्षा

लेखिका - रीता माने

शिक्षा के बिना हमारा जीवन अंधकारमय है

शिक्षा से ही हमारा देश महान है

हर किसी को समझाओ शिक्षा का महत्व

लड़का हो या लड़की दो को दो बराबरी का अवसर

क्योंकि शिक्षा ही सबके जीनव का आधार है

शिक्षा से ही हमारा देश महान है

अशिक्षा हमारे जीवन में बुराइयों की जड़ है

शिक्षा से इस बुराई को दूर करना हमारा परम कर्तव्य है

शिक्षा का प्रसार फैलाओ देश को आगे बढ़ाओ

क्योंकि शिक्षा ही .....

शिक्षा से ही .....

शिक्षा अंधकार को दूर कर उजाला फैला देती है

निराशा में आशा की किरण जगा देती है

असभ्यता से सभ्यता का पाठ पढ़ा देती है

अज्ञान से ज्ञान का प्रकाश फैला देती है

<u>विटामिन और रोग (चौपाई छंद)</u>

लेखिका - स्नेहलता "स्नेह"

है विज्ञान ज्ञान का गागर, खोज करे क्यों खारा सागर

देखो सीखो दैनिक घटना, प्रश्नों के उत्तर मत रटना

बच्चो बातें मेरी मानो, फल सब्जी खाने की ठानो

गौ का दूध बड़ा गुणकारी, दूर रखे तन से बीमारी

अंधापन है रात रतौंधी, दूर करे पीले फल सब्जी

गाजर, आम पपीता खाना, और रतौंधी दूर भगाना

नींबू दूर करे है स्कर्वी, और घटाए तन की चर्बी

होत विटामिन सी है ऐसा, दंत चमकता मोती जैसा

धूप सुबह की लगे औषधी, तगड़ी होती सारी हड्डी

दूध विटामिन डी है देता, सारी दुर्बलता हर लेता

श्रीफल पानी लगता मीठा, बना विटामिन ई का पीठा

मूंगफली अखरोट मलाई, फूलों जैसी रंगत पाई

रूधिर का थक्का जल्दी जमता, काम विटामिन 'के' ये करता

पालक मेथी बथुआ सरसों, अलसी मक्का खाओ गुड़ जों

बच्चों पानी पीना ज्यादा, भोजन गर्म और हो सादा

पिज्जा बर्गर तुम मत खाओ, मैगी नूडल घर मत लाओ

याद करो सब ये चौपाई, मैने तो जी भर के गाई

लगती है मुझको मनभावन, ज्ञान नदी है सबसे पावन

मुहावरे ही मुहावरे

लेखक - नेमीचंद साहू

जीवन रूपी बगिया में

मिले फूल और धागा,

सदाचार, मीठे बोल से

बने सोने पे सुहागा !

अपनों से रूठना समझो

अपनी तकदीर का फूटना!

धूल में मिले सम्मान भी

और हो तख्ता उलटना !

आज देश पर संकट है,

शत्रुका ताक पर रहना !

अहिंसा के हम पुजारी

तभी दॉत पीसकर रहना!

अगर हम मिले साथ सभी

उनको पड़े नाक रगड़ना

आ जाये औकात में तो,

पल में ही नशा उतरना !!

पॉव फूक-फूककर रखना

देते है नसीहत ज्ञानी !

बाल बॉका न कर सके,

अगर न करे मनमानी !!

बिल्ली के गले घंटी बॉधना

प्रारंभ उन्होंने कर दिया !

हमने भी अब की बार,

कसके तमीचा जड़ दिया!!

पैरों तले जमीन खिसकना

अब पता चल ही जायेगा !

मौत का सिर पर खेलना

यकीनन एक दिन आयेगा !!

लोहे के चने चबाना अब

बायें हाथ का खेल अपना!

सौ सुनार की एक लुहार की

आज बस एक ही सपना !!

<u>अर्थ</u>

1. सोने पे सुहागा - लाभ ही लाभ होना
2. तकदीर का फूटना - काम बिगड़ना
3. तख्ता उलटना - बना हुआ काम बिगड़ना
4. ताक में रहना - मौका देखना
5. दांत पीसना - गुस्सा होना
6. नाक रगड़ना - क्षमा मॉगना

7. नशा उतरना - घमंड उतरना
8. पॉव-फूंक - फूंककर रखना - सोचकर काम करना
9. बाल बॉका न होना - हानि न होना
10. बिल्ली के गले में घंटी बांधना - खुद को परेशानी में डालना
11. तमाचा जड़ना - बदला लेना
12. पैरों तले जमीन खिसकना - होश उड़ जाना
13. लोहे के चने चबाना - अत्यधिक कठिन कार्य
14. बाएं हाथ का खेल - आसान काम
15. सौ सुनार की एक लुहार की - अनेक कष्टों पर एक सुख भारी होना

आओं हंस लें

टीचर: आज स्कूल में देर से आने का तुमने क्या बहाना सोचा है?
स्टूडेंट: सर आज मैं इतनी तेज दौड़कर आई कि बहाना सोचने का मौका ही नहीं मिला.

पत्नी: शादी से पहले तुम मुझे न जाने कहां-कहां घुमाते थे लेकिन अब ऐसा क्यों नहीं करते?

पति: चुनाव के बाद कभी प्रचार देखा है क्या?

पापाः बेटा, तुम्हारे रिजल्ट का क्या हुआ?
बेटा: पापा 80% आए हैं.
पापाः लेकिन मार्कशीट पर तो 40% लिखा है?
बेटा: बाकी के 40% आधार कार्ड लिंक होने पर सीधे अकाउंट में आएंगे.

एक बार तो मैं भी बॉर्डर पर लड़ने चला गया फिर यह सोचकर वापस आ गया... जब घरवाली ही नहीं डरती तो दुश्मन क्या खाक डरेगा!

जिन लड़कों का दिमाग खराब रहता है वे उदास ना हों बल्कि उन लड़कियों से मिलें जो कहती हैं...

एक चांटा मारूंगी दिमाग सही हो जाएगा.

पहेलियां

1. पंडित प्यासा क्यों ? गधा उदासा क्यों ?

2. ऐसा कौन सा फल है जिसके पेट में दांत होते हैं ?

3. छोटे से हैं मटकूदास, कपड़े पहने एक सौ पचास

4. वह क्या है जिसकी आँखों में अगर अंगुली डालो तो वह अपना मुँह खोल देती है ?

5. ऐसा कौन सा महीना है जिसमें लोग सबसे कम सोते हैं ?

6. वह क्या है जिसमें से आप सब ले लेंगे फिर भी कुछ बच जायेगा ?

7. वह क्या है जो आप किसी को देने के बाद भी रख सकते हो ?

उत्तर - 1. लोटा न था, 2. अनार, 3. प्याज, 4. कैंची, 5. फरवरी, 6. सबकुछ, 7. वचन

छत्तीसगढ़ी भासा के महत्तम

लेखक - डॉ. जयभारती चन्द्राकर

छत्तीसगढ़ी भासा अब्बड़ मीठ, गुरतुर बोली आय,

आमा के रूख मा कोइली मीठ, बोली अस आय.

छत्तीसगढ़ी भासा अब्बड़ मीठ.....

हिदय के खलबलावत भाव ल उही रूप म लाय,

फूरफूंदी अस उड़त मन के, गीत ल गाय.

छत्तीसगढ़ी भासा अब्बड़ मीठ.....

जइसन बोलबे तइसन लिखबे, भासा गुन आय,

जै जोहार अउ जै जवहरिया, सब्द भासा के आय.

छत्तीसगढ़ी भासा अब्बड़ मीठ.....

अपन भासा म गोठियावव, सरम का के आय,

छत्तीसगढ़ी भासा हमर राज के भासा आय .

छत्तीसगढ़ी भासा अब्बड़ मीठ.....

हमर भासा बर रूख पीपर, करेजा म ठंडक देवय,

लोक गाथा अउ लोक गीत हर, सबके पीरा हरय.

छत्तीसगढ़ी भासा अब्बड़ मीठ.....

अपन भासा म पढ़व लिखव, गोठियावव इही गोठ,

छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया, देस म हे चिन्हार.

छत्तीसगढ़ी भासा अब्बड़ मीठ.....

अपन भासा के बढ़ोतरी बर, जुरमिर अलख जगाबों,

अब्बड़ सुघ्घर भासा के सुवास ल फहराबों.

छत्तीसगढ़ी भासा अब्बड़ मीठ.....

बसंत छा गे

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

जब ले आ हे ऋतु बसंत हा, मन हा सबके डोलत हे ।
बाग बगीचा सुघ्घर लागे, रहि रहि कोयल बोलत हे ।।

मउरे हावय आमा संगी, अब्बड़ के ममहावत हे ।
फूले हावय फूल सबो जी, सबके मन ला भावत हे ।।
सुरसुर सुरसुर हवा चलत हे, डारा पाना डोलत हे ।
बाग बगीचा सुघ्घर लागे, रहि रहि कोयल बोलत हे ।।

पींयर पींयर सरसों फूले, खेत खार मा झूमत हे ।
चना मटर ला खाये बर जी, लइका मन हा घूमत हे ।।
आये हे संदेश पिया के , छुप छुप चिठ्ठी खोलत हे ।
बाग बगीचा सुघ्घर लागे, रहि रहि कोयल बोलत हे ।।

वंदे मातरम

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

देश हमर हे सबले प्यारा, एकर मान बढ़ाना हे ।
भेदभाव ला छोड़ो संगी, सबला आघू आना हे ।।

आजादी ला पाये खातिर, कतको जान गँवाये हे ।
देश भक्त मन आघू आइस, तब आजादी आये हे ।।

नइ झुकन देन हमर तिरंगा, लहर लहर लहराना हे ।
भारत माँ के रक्षा खातिर, सीमा मा अब जाना हे ।।

राजिम मेला

श्रवण कुमार साहू 'प्रखर'

श्रध्दा के दीया म, भक्ति के बाती, सजा के आये हों

ये मोर राजिम, तोरे दुवारी, म संगम के धारी म

कंचन थारे, अगर के बाती

पूजा करौं मैं, तोरे दिन राती

तोरचे गुण ल मैं निसदिन बावंव

संझा बिहनियां चाहे आधी राती

चंदन बंदन अउ नरियर के भेला सजा के लाए हों

ये मोर राजिम तोरे दुापरी संगल के धारी म

महानदी पैरी सोंढ़ुर के धारा

राजीव लोचन अउ कुलेश्वर सहारा

लोमेश आश्रम लगे मनभावन

देवता बसे जिहां पतित पावन

तन के शक्ति अउ मन के भक्ति संग म लाए हों

ये मोर राजिम तोरे दुवारी संगम के धारी म

चंदन जस माटी अमरित कस पानी

जिहां गूंजे साधू संतों के वाणी

चलो पुन्नी मेला म जाबो

काया माया सब ल उजराबो

पितर के तर्पण अउ जीवन के दर्शन करे बर आए हों

ये मोरर राजिम तोरे दुवारी संगम के धारी म

राजिम मेला

प्रिया देवांगन "प्रियू"

राजिम मेला आगे संगी ,
घूमे ल सब जाबो।
राजीव लोचन के दर्शन करके ,
जल चढ़ा के आबो।
अब्बड़ भीड़ हाबे संगी,
राजिम के मेला में।
जगा जगा चाट पकौड़ी ,
लगे हे ठेला में ।
किसम किसम के माला मुंदरी
सबोझन बिसाबोन।
नान नान लइका मन बर,
ओखरा लाई लाबोन।
बड़े बड़े झूला लगे हे,
लइका मन ह झूलत हे।
ब्रेक डांस अऊ आकाश म,
बइठे बइठे घूमत हे।।

<u>सुंदर हे पढ़ाई</u>

लेखक - देवानंद साहू

सुंदर हे पढ़ाई, अब नई हे एमा खोंट

सब मिल जुल के पढ़बो झन करहु अब सोच ।

भाषा सरल होगे, गणित के पढ़ाई

अइसे सुहाथे जइसे, दूध कस मलाई।

गतिविधि समझाहि समझ मे आहि तोर

ज्ञान ल बगराही मोर नवाचार के शोर

एक बेर नही शिक्षक दस बेर सिखाही

तभो नई समझबे त वो मया ले सिखाही

सिरतोन कहिथो लइका अब आजा स्कूल ओर

राज के पक्षी मैना अउ देश के पक्षी मोर।

मुसवा

लेखक - बलदाऊ राम साहू

कुतर-कुतर के खाथस मुसवा,

काबर ऊधम मचाथस मुसवा।

चीं-चीं, चूँ-चूँ गाथस काबर तैं,

बिलई ले घबराथस काबर तैं ।

काबर करथस तैं हर कबाड़ा,

अब तो नइ बाँचे तोरो हाड़ा।

बिला मा रहिथस तैं छिप के,

हिम्मत हे तब देख निकल के।

कान पकड़ के नचाहूँ तोला,

अड़बड़ सबक सिखाहूँ तोला।

<u>बाल कामिक्स</u>

बाल कॉमिक्स माह फरवरी 2019
नाम – मनीष कुमार यादव
कक्षा – 5वी
स्कूल – प्रा. शा. ढोंगादरहा
जिला – कोरबा (छत्तीसगढ़)
तुम इस पर हँस क्यों रहे हो? कोई यदि गिर जाए
मैं गिर गया
मुझे तुम पर हँसी आ रहा है।

नाम - मनीष कुमार यादव कक्षा - 5वी
प्रा. शा. टोंगादरहा
परी

वर्ग पहेली

रचनाकार – दीपक कंवर

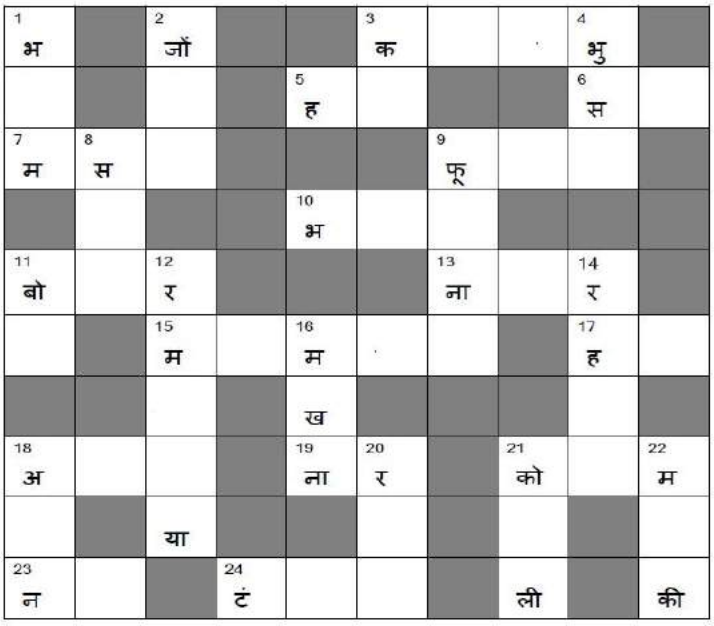

दाएं से बाएं - 3.कभी कभी, 5.हल्का, 6. एक जाति का, 7. मसूर, 9. बच्चो का एक खेल, 10. भैंस, 11. बेर, 13. हल, 15. फैशनेबल इंसान, 17. हाँ, 18. इमली, 19. लता, 21. कौसम, 23. नाखून, 24. कुल्हाड़ी

ऊपर से नीचे - 1. भ्रम, 2. भुट्टा, 3. कड़ुआ, 4. मच्छर, 8. साल पेड, 9. रूठने वाला, 11. नाभी, 12. भिंडी, 14. आवास, 16. कद्दू, 18. आचार, 20. रात, 21. कोयल, 22. मटकी

उत्तर